

भारतीय विमानपत्तनन प्राधिकरण

प्रेस विज्ञप्ति

भाविप्रा के हवाई अड्डों पर सौर ऊर्जा का उपयोग

नई दिल्ली 28.05.2014 : ऊर्जा के वैकल्पिक संसाधनों के उपयोग में भाविप्रा के प्रयासों के क्रम के एक भाग के रूप में, भाविप्रा अपने हवाई अड्डों पर सौर शक्ति संयंत्र स्थापित करने जा रहा है जिससे न केवल इसकी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति होगी बल्कि स्थानीय ग्रिडों को भी अतिरिक्ते अपनी सौर शक्ति उपलब्धी करवाई जाएगी । श्री अशोक लवासा, सचिव, नागर विमानन तथा श्री आलोक सिन्हा , संयुक्तर सचिव, नागर विमानन मंत्रालय तथा अध्याक्ष भाविप्रा तथा श्री राजेन्द्र निमजे, प्रबंधक निरीक्षक, एस ई सी आई की सम्मामननीय उपस्थिति में भाविप्रा के हवाई अड्डों पर सौर ऊर्जा शक्ति संयंत्रों को स्थापित करने हेतु भाविप्रा तथा भारतीय सौर ऊर्जा निगम ने आज समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए । राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली में श्री सुधीर रहेजा, सदस्य (योजना) तथा सौर ऊर्जा निगम (एस ई सी आई) निदेशक श्री राकेश कुमार ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए । इस आधार पर भाविप्रा तथा एस ई सी आई के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे ।

इस अवसर पर श्री अशोक लवासा, सचिव, नागर विमानन ने रिचार्जबल बैटरियों में उत्पन्न ऊर्जा के भंडारण सहित विभिन्न आउटलेटों के माध्यम से सौर ऊर्जा के उपयोग के महत्व के बारे में बताया । उन्होंने हवाई अड्डों पर उपलब्ध विशाल खुले क्षेत्रों, मुख्यतः रूप से छतों के ऊपर के क्षेत्र उपयोग करने पर बल दिया । उन्होंने बताया कि दक्षता तथा प्रभावी ढंग से भंडारित ऊर्जा का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए भाविप्रा, हवाई अड्डों की विभिन्न स्थापनाओं हेतु नवीनीकृत ऊर्जा के अन्यन एप्लिकेशनों सहित उपयोग की जाने वाली ऊर्जा के प्रयोग करने हेतु आउटलेटों की पहचान करे । सचिव, नागर विमानन ने निदेश दिए कि प्रभावी रूप से लागू करने के लिए परियोजनाओं को समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए एवं हवाई अड्डावार विनिर्दिष्ट समय-सीमा निर्धारित की जाए तथा प्रभावी कार्यान्वयन के लिए फालोअप किया जाए।

सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने से न केवल एक समय अवधि में बिजली के बिलों में भारी बचत होगी बल्कि जहाँ तक ऊर्जा की आवश्यकताओं का संबंध है, हवाई अड्डा स्वायं सस्टेनेबल बनेगा तथा कार्बन उत्सर्जन में भी काफी कमी आएगी ।

50 एम डब्ल्यूनेगा क्षमता के संयंत्रों (चरण-1 में संचयी क्षमता) को प्रतिष्ठापित करना भाविप्रा की योजना में शामिल है जिसे 150 एम डब्ल्यू (संचयी) तक एक निश्चित अवधि में बढ़ाया जाएगा । भाविप्रा के पास उपलब्धम अतिरिक्त भूमि पर यह संयंत्र स्थापित किए जाएंगे एवं भाविप्रा अवसंरचनाओं की ज्यादातर छतों पर इन्हें प्रतिष्ठापित किया जाएगा । सौर ऊर्जा संयंत्रों को स्थापित करने के लिए भाविप्रा ने लगभग 30 हवाई अड्डों की पहचान की है

जनसम्पर्क निदेशालय द्वारा जारी

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

म.प्र. (जनसंपर्क) 9810025096

011-24622787

सं.12/2014-15



हवाई अड्डों पर सौर ऊर्जा संयंत्रों को स्थापित करने हेतु समझौता जापन पर हस्ता-क्षर करने के तुरंत बाद ली गई तस्वीरों में श्री अशोक लवासा, सचिव (नागर विमानन) तथा श्री आलोक सिन्हां, संयुक्त सचिव, नागर विमानन मंत्रालय तथा अध्याक्ष भाविप्रा । देश के 30 हवाई अड्डों पर 50 मेगावाट की संचयी क्षमता वाले सौर संयंत्र लगाए जाएंगे ।

संपादक के लिए नोट

दैनिक आवश्यकताओं में ऊर्जा बचत तथा ऊर्जादक्षता की दिशा में भाविप्रा की अन्यक

सस्टे नेबल विकास गतिविधियाँ

सस्टे नेबल विकास परियोजनाओं/गतिविधियों के माध्यकम अड्डों/भवनों के प्रचालन में बहुत अधिक बिजली की से, भाविप्रा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप दोनों से पर्यावरणीय प्रदूषण को नियंत्रित करने हेतु योगदान दे रहा है। हवाई खपत होती है जिसके कारण पर्यावरणीय प्रदूषण होता है। हाल के पिछले कुछ वर्षों में,

भाविप्रा ने पोषणीय विकास के लिए कई पहल की है जैसे कि:-

- ऊर्जा दक्षता ब्यूकरो की अपेक्षाओं के अनुरूप 4 स्तर रेटिंग या इससे ऊपरी स्तर के सभी विद्युत उपकरणों का प्रयोग।
- बिजली को स्वचालित तरीके से बंद करने के लिए आक्यू पेंसी सेंसर टाइमर्स।
- नई परियोजनाएं, जहाँ नए टर्मिनल भवनों का निर्माण किया जा रहा है अथवा निर्माणाधीन है, भवन प्रबंधन प्रणाली (बी एम एस) लागू की गई है। इससे कार्यात्मक आवश्यकताओं/ऊर्जा की मांगों को पूरा करने हेतु ऊर्जा के अधिकतम उपयोग में सहायता मिलेगी।
- वातानुकूलन संयंत्रों, एयर हैंडलिंग इकाईयों पंप इत्यादि में मैकेनिकल दक्षता में सुधार करने के लिए ऊर्जा दक्षता चीलर्स तथा वैरीएबल स्पीड ड्राइव का प्रयोग किया जा रहा है।
- ऊर्जा बचत वाले फ्लूरोसंट लैंपो (टी-5) का प्रयोग किया जा रहा है। आंतरिक रोशनी के लिए एल ई डी लैम्प का प्रयोग, जिससे न केवल ऊर्जा की बचत होती है बल्कि अधिक लंबे समय तक चलती है, नई योजनाओं हेतु प्रस्तावित है।
- वातानुकूलन हानि में कमी को दूर करने के लिए स्वचालित स्लाइडिंग दरवाजे तथा एयर कर्टन का प्रयोग।
- हवाई अड्डों पर मशीन कक्ष रहित एलिवेटर्स का उपयोग, जोकि परम्परागत एलिवेटर्स की तुलना में लगभग 40% ऊर्जा की बचत करते हैं।
- ऊर्जा की बचत हेतु हवाई अड्डों पर सेंसरों सहित एस्केलेटर उपलब्ध कराए गए हैं।
- इंदौर, गुवाहाटी तथा जयपुर हवाई अड्डों पर टैक्सीन्स तथा एप्रन के किनारों पर लगी हुई लाइटों को एल ई डी लाइटों में बदलना।
- बैगेज की लोकेशन हेतु सेंसर वाले बैगेज कन्वेयर प्रणाली तथा बैगेज पगणाली को स्वचालित रूप से बंद करने हेतु आक्यूपेन्सी उपलब्ध करवाई गई है।